जैन पाठशाला : वर्तमान की आवश्यकता

आज की इस भौतिक युग में धर्म के संस्कारों का लोप होता जा रहा है। भौतिक पढ़ाई हेतु कई विद्यालय मौजूद हैं उनकी संख्या में प्रतिदिन वृद्धि भी होती जा रही है। बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर जीवन में आगे बढ़ने के अवसर भी पा रहे हैं पर क्या शांत निर्मल, स्वच्छ, सुंदर जीवन, तनाव रहित जीवन का भी ज्ञान पाया ?

अपने धर्म की मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी बिना कई बच्चे धर्म से विमुख भी होते जा रहे हैं धर्मनिष्ठ संस्कारों से आत्मा को पल्लवित किए बिना धर्म में जीवन संभव नहीं।

सम्यक ज्ञान की ज्योति को विकसाने में जैन पाठशाला का विशेष योगदान होता है। धार्मिक शिक्षा के बिना संस्कारों का शुद्धिकरण संभव नहीं। ज्ञान की प्याऊ जैसी पाठशाला बच्चों को पवित्र पद पर स्थापित करती है..।।

ऐसे ही सद्ज्ञान-सम्यक ज्ञान को प्राप्त कराती है धार्मिक जैन पाठशाला..।।

पाठशाला क्या है?

पाठशाला है संस्कारों की नींव

पाठशाला है जैनों का भविष्य

पाठशाला है धर्म की उत्पत्ति

पाठशाला है ज्ञान का उपार्जन

पाठशाला में होती है सामायिक

पाठशाला में होता है ग्रंथों का ज्ञान

पाठशाला में होती है प्रभु की स्तुति

पाठशाला से मिलती है गुरु भगवंतो के दर्शन की प्रेरणा

पाठशाला से मिलती है गलत संगतो से मुक्ति

पाठशाला तो एक फैक्ट्री है जो सच्चे, सदाचारी और सुसंस्कारी व्यक्तित्व का निर्माण कर महत्वपूर्ण योगदान देती है..।।

पाठशाला का उद्देश्य:

1. छात्रों में धर्म के प्रति रुचि जागृत करना..।।

2. छात्रों में आत्मकारी शास्त्रों को पढ़ने की रुचि जागृत करना..।।

3. तत्वज्ञान और सदाचार संबंधी ज्ञान जागृत कराना..।।

4. चारों अनुयोगो का समन्वित ज्ञान देना..।।

5. अपने धर्म पूर्वजों के संबंध में सामान्य जानकारी देना..।।

6. सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न कराना..।।

7. छात्रों का सदाचार से युक्त नैतिक जीवन बनाना..।।

8. छात्रों में धर्म धार्मिक क्रियाओं और धार्मिक अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण जागृत करना..।।

9. छात्रों को धर्म अच्छा लगे और 'मैं जैन हूं' और इसका उन्हें गर्व हो इस भावना का विकास करना..।।

10. छात्र किसी भी पंथवाद के पोषण और शोषण की अपेक्षा स्वाध्याय एवं धार्मिक अध्ययन की तरफ आकर्षित करना..।।

पाठशाला अध्यापक की विशेषताएं:

शिक्षण त्रिमुखी प्रक्रिया है उसके तीन केंद्र बिंदु होते हैं :

शिक्षक छात्र और विषय

इन तीनों में संबंध स्थापित करना ही शिक्षण है इस संबंध को स्थापित करने का पूरा-पूरा दायित्व शिक्षक पर है अतः शिक्षण की सफलता सुयोग्य शिक्षकों पर निर्भर है..।।

स्वयं ज्ञान अर्जन करना अलग बात है और प्राप्त ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाना दूसरी बात है इसके लिए अध्यापक का जागरूक मननशील मनोवैज्ञानिक होना आवश्यक है..।।

हमें ऐसे योग्य शिक्षकों की आवश्यकता है:

1. जो छात्रों में वीतराग विज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर सकें।

2. छात्रों को सामान्य तत्वज्ञान करा सकें।

3. छात्रों को सदाचार से युक्त नैतिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित कर सकें।

एक कुशल अध्यापक को निम्नलिखित बातों को सदैव ध्यान में रखना चाहिए:

1. कक्षा में सर्वप्रथम बोर्ड परिणाम कक्षा विषय प्रकरण एवं दिनांक लिख देना चाहिए।

2. कक्षा में अध्यापक की दृष्टि छात्रों पर रहनी चाहिए।

3. अध्यापक को न तो अति मंद स्वर में और न ही तेज स्वर में बोलना चाहिए सब छात्र आसानी से सुन सके इस प्रकार के मध्यम स्वर में स्पष्ट बोलना चाहिए।

4. छात्रों के स्तर एवं पूर्व ज्ञान को आधार मानकर अपनी बात समझानी चाहिए।

5. विषय को इस तरह उठाना चाहिए कि छात्रों में प्रस्तुत विषय जानने की जिज्ञासा हो।

6. सरलता से कठिनता की और जाना चाहिए जैसे जीव और अजीव का भेद विज्ञान कराते समय पहले स्पष्ट अजीव टेबल कुर्सी आदि का ज्ञान कराना उसके पश्चात जीव के संयोग में रहने वाले शरीर इंद्रियां आदि अजीव का ज्ञान कराना।

7. उदाहरण से सिद्धांत की ओर जाना चाहिए।

8. ज्ञात से अज्ञात की ओर जाना चाहिए जैसे बिल्ली के माध्यम से शेर की पहचान कराना अथवा चित्र के माध्यम से व्यक्ति की पहचान कराना।

9. मूर्त से अमूर्त की ओर जाना चाहिए जैसे सात तत्वों को समझाने के लिए स्थूल मूर्त नाव पर घटित करना पश्चात आत्मा पर घटित करके समझाना।

पाठशाला में पढ़ाने की पद्धति:

वैसे तो प्रत्येक कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए व्यवस्थित वैज्ञानिक विधि और तत्संबंधी कार्य कुशलता आवश्यक है किंतु शिक्षा के क्षेत्र में यह अनिवार्य है।

आधुनिक शिक्षा पद्धति में अनेक वैज्ञानिक परिवर्तन हुए हैं और निरंतर हो रहे हैं।

पद्धतियाँ:

1. Smart Class:

Power Point Presentation के माध्यम से छात्रों में विषय के लिए उत्साह जागरूक करना इसमें विषय के बारे में चित्र वीडियो ऑडियो के द्वारा समझाया जा सकता है..।।

2. प्रयोग के माध्यम से:

उदाहरण: सात तत्वों के लिए नाव वाला प्रयोग

3. Monoacting: शिक्षक अपने स्वर को साध कर वाचिक और आंगिक अभिनय के साथ पाठ का वाचन करते हैं कि मानो अलग-अलग पात्र बोल रहे हो इसमें अध्यापक एक तरह एकपात्रीय नाटक (मोनो एक्टिंग) करते हैं यहां अभिनव का आशय कक्षा को नाटक का स्टेज बनाने से नहीं बल्कि पढ़ाने के मूलभूत विषय के साथ भावनात्मक आंशिक अभिनय से है..।।

4. कथाओ, काव्य और भजनो के माध्यम से शिक्षा/ नैतिक शिक्षा प्रदान करना:

कथाओ के माध्यम से (दृष्टांत से सिद्धान्त):

उदाहरण: 1. महापुरुषों का जीवन परिचय- 63 शलाका पुरुषों का जीवन परिचय, 24 तीर्थंकर की कहानियाँ

2. सतियों की कथाएँ (सती अंजना, मैना सुंदरी, चंदनबाला)

3. अंजन चोर, अकलंक निकलंक कथा

ऐसी ही और कथाओ के माध्यम से छात्रों को जीवन मे धैर्यता का पाठ पढ़ाना जिससे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समता भाव के परिणाम रहेंगे..।।

काव्य:

माँ धर्म की पुस्तक दे दो

मैं पाठशाला जाऊं

सब जीवो की दया पालकर

सच्चा जैन कहाऊ..।।

भजन/बाल गीत:

उदाहरण: 1.चार गति के पार से सिद्धों का संदेश ये,

2.जिनधर्म की डगर पर,

3.हम होंगे ज्ञानवान।

5. पाठशाला के खेल:

उदाहरण: आध्यात्मिक फुटबॉल, आध्यात्मिक क्रिकेट, धार्मिक पहेलियाँ, धार्मिक क्विज़

6. प्रतियोगिता के माध्यम से:

पाठशाला के विषयों को प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों को कंठस्थ कराना, प्रतियोगिता के द्वारा बच्चों को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर प्रदान करना, लिखित परीक्षा के साथ मौखिक परीक्षा के द्वारा धार्मिक पाठ्य को याद कराना, खोजो खोजो पढ़ो और भरो की सरलतम शिक्षण पद्धति का प्रयोग करना..।।

पाठशाला का महत्व:

"चलो डग बढ़ाओ मंदिर की ओर , एक कदम संस्कार की ओर

चलो वीतराग विज्ञान की ओर , एक कदम संस्कार की ओर

ज्ञान प्रसाद रूप पाठशाला ही ठौर , सब चले एक कदम संस्कार की ओर"

1. धार्मिक पाठशाला में संस्कार धर्म के मूल सिद्धांत नैतिक जीवन व शिष्टाचार की शिक्षा मिलती है जिससे बच्चे का जीवन पर सुगम सहज बनता है धर्म के साथ ही संस्कृति का शिक्षण सेवा साधना का प्रशिक्षण मिलता है।

2. धर्म के संस्कारों से संस्कारित संतान कभी जीवन में गलत रास्ता तय नहीं करती साथ ही जीवन भर अपने माता पिता की आज्ञा अनुसार चलती है।

3. पाठशाला द्वारा बच्चों में जो संस्कार पहुंचते हैं वह बच्चे को जीवन भर काम आते हैं, पाठशाला के माध्यम से बच्चों में पहुंचने वाले धर्म संस्कारों से ही भविष्य के लिए अपने धर्म को सुरक्षित किया जा सकता है।

4. बाल्य अवस्था में जो बच्चे शिक्षण प्राप्त करते हैं वहीं उद्योग हो या व्यापार धर्म समाज में शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति प्राप्त करते हैं।

5. अपने संस्कारों द्वारा परिवार धर्म एवं समाज की गरिमा बढ़ाते हैं।

6. वस्तु व्यवस्था का सही ज्ञान होता है सत्य की समझ मिलती है।

7. हेय और ज्ञेय उपादेय का ज्ञान होगा कि क्या छोड़ने और क्या अपनाने योग्य है।

संस्कारों का महत्व और बढ़ जाता है जब हमारे बालको अन्य संस्कृतियों लुभाने लगे, विगत दो दशकों में इस गति से पाश्चात्य संस्कृति का विकास भारत में हुआ है कि आज हमारी अनादि निधन तत्वज्ञान की संस्कृति लोगों की श्रद्धा व आचरण से लुप्त सी होने लगी है।

अब वे जिस गति से हमारी संस्कृति को तोड़ना चाहते हैं क्यों ना हम उससे अधिक गति से उसका प्रचार प्रसार करें।

आइए हम मिलकर जैन शासन के तत्वज्ञान का ध्वज ऐसे फैराएँ कि उसकी आंधी में पाश्चात्य विकृतियों के महल ढह जाऐ।

पाठशाला पर कुछ सुंदर पंक्तियों के साथ इस लेख का समापन करती हूँ..

पाठशाला विचार है, मन का विस्तार है

पाठशाला श्रेष्ठ है, सबसे उत्तम उपहार है

पाठशाला ज्ञान है, उच्चतम व्यवहार है

पाठशाला भवसागर में संस्कार की नाव है

पाठशाला कला है, ढाल है, ठंडी छांव है

पाठशाला मान है, जैनियों की शान है

पाठशाला सरस है, सरल स्वाध्याय है

पाठशाला सौभाग्य है, उन्नति है विश्राम है

पाठशाला नित्य प्रति बढ़ती आबाद शक्ति है,

प्रभु की भक्ति है स्व की दया है,महा मुक्ति का सोपान है..।।

शीतल भंडारी
भंडारी भवन, गौर मूर्ति, सागर।
मोबाइल-9131558527.